Vitrigold
Biotech Pvt. Ltd.

कीट: कीट फसल के लिए बहुत हानिकारक है। क्षतिग्रस्त अनार और कवक सड़न का कारण बनते हैं। अनार कीट नियंत्रण के लिए किसी भी प्रणालीगत कीटनाशक का प्रयोग करें।

अन्य क्षति: तोते और गिलहरियाँ अनार के फलों में छेद कर देती हैं नुकसान पहुंचाता है और ऐसे क्षतिग्रस्त फल गिर जाते हैं। जब फल छोटा हो तो उसके ऊपर कागज की एक थैली रखकर या पूरे खेत में जाल लगाकर नुकसान को कम किया जा सकता है।

अनार के फलों का टूटना: मिट्टी में बोरान की कमी के कारण अपर्याप्त नमी के कारण अनार के फल पेड़ पर या उसके पास फट जाते हैं।

सूर्य की गर्मी का फल पर प्रभाव: गर्मी के दिनों में सूर्य की किरणों से फल के छिलके के एक तरफ काले धब्बे पड़ जाते हैं, इस प्रभाव से पौधे को बचाने के लिए पर्याप्त मात्रा में फसल या सफेद कागज लपेटना चाहिए।

फल तोड़ना: फल लगने के 4 से 5 महीने बाद फल तोडने लायक हो जाता है. फल का छिलका हल्का पीलापन होता है. जब फल पूरी तरह से विकसित हो जाएं तो कटाई करें और अंगूठे से थपथपाने पर फल जैसी आवाज निकले। ऊतक संवर्धित पेड़ दूसरे वर्ष से फल देना शुरू कर देता है

उपज: प्रति परिपक्व पेड़ 150 से 200 फल।

लाभकारी खेती:

•अच्छा उत्पादन •अच्छा बाज़ार मूल्य

•कम श्रम की आवश्यकता है •तेज़ और अधिक उत्पादक

Vitrigold
Biotech Pvt. Ltd.

गुणधर्म	गुटी (काटकर) से उगाया हुआ एक पौधा।	टिश्यू कल्चर से बने पौधे
जात	सत्यापित करना कठिन है	100% गारंटी
मातृत्व	गुणवत्ता भिन्न होती है	एक समान
रोग की संभावना	सामान्य उतार-चढ़ाव की कोई गारंटी नहीं	पूर्णतः रोगमुक्त
विकास	अनियमितता	भरावदार
आकार, रंग और दाने	अनियमित	अच्छा लग रहा है
बाजार कीमत	उतार चढाव	अधिक मिलना
उत्पादन	अनियमित	अच्छा और नियमित

-: अधिक माहिती के लिए संपर्क करे :-

नोध : पोधे की वृध्धि ओर उत्पादन का आधार आबोहवा और मावजत पर आधार रखता है।

Vitrigold
Biotech Pvt. Ltd.

Regd. Office :
Opp. Walmi Campus, Anand - Vadod Road,
At. & Po, Hadgud - 388110 Dist. Anand (Guj.)
email : vitrigold@gmail.com
Mo.: +91 97277 61625, +91 9925145901

Vitrigold
Biotech Pvt. Ltd.

भारत सरकार (D.B.T) मान्य

भगवा सिंदुरी
सुपर भगवा

* १००% जातकी गेरंटी
* समान गुणवता
* संपूर्ण रोग मुक्त
* गुणवतासभर उत्पादन
* पोषणक्षम बाजारभाव

Vitrigold
Biotech Pvt. Ltd.

• DBT(Department of Biotechnology, Govt.of India) मान्यता प्राप्त टिशू कल्चर प्रयोगशाला• गुणवत्तापूर्ण टिशू कल्चर उत्पाद बनाने वाली कंपनी• सालाना 70 लाख से अधिक पौधों का उत्पादन और बिक्री करने वाली कंपनी• अत्याधुनिक प्रयोगशाला और हाई-टेक हार्डीनिंग इंफ्रास्ट्रक्चर

विदेशों की तुलना में हम कृषि के क्षेत्र में कम उन्नत तकनीक का उपयोग करते हैं। वीट्रीगोल्ड बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड हमारे राज्य और देश के लिए उपयुक्त उच्च गुणवत्ता वाली कृषि तकनीक किफायती मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए काम कर रही है। कंपनी अनार की भगवा सिंदुरी और सुपर भगवा जातोकी उच्च गुणवत्ता वाली रोग मुक्त टिशू कल्चर पौधे तैयार करती है।

अनार: अनार (punica granatum) की उत्पत्ति ईरान से हुई है। भारत में अनार की खेती नकदी फसल के रूप में होती है। यह मुख्य रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और असम में उगाई जाती है। अनार खारी मिट्टी और खारे पानी के प्रति सहनशील है। इसमें वर्षा की कमी वाली परिस्थितियों में भी रहने की शक्ति होती है। अनार को हल्की एवं पथरीली मिट्टी में भी उगाया जा सकता है। अनार का पौधा लम्बा होता है और इसकी ऊंचाई 2 से 4 मीटर तक होती है। समुद्र स्तर से 1850 अक्षांश तक लगाया जा सकता है।

Vitrigold
Biotech Pvt. Ltd.

जात: अनार की कई किस्में हैं जिनमें भगवा-सिंदुरी और सुपर भगवा लोकप्रिय किस्में हैं।

भगवा सिंदुरी: भारत की सबसे अधिक खेती वाली प्रसिद्ध जात। फल के छिलके का रंग भगवा, आकर्षक चमक वाला फल। लाल बीज, मोटे फल और अच्छा बाजार मूल्य देने वाली तथा निर्यात के लिए सर्वोत्तम एकमात्र जात है।

पौधे का चयन: अनार आमतौर पर बीज या कलमों द्वारा प्रवर्धित किया जाता है, लेकिन टिश्यू कल्चर द्वारा प्रचारित पौधे वास्तविक जात के, रोगमुक्त और जोरदार होते हैं ताकि अनार की खेती तेजी से और अधिक लाभदायक हो सके।

बुआइ की विधि एवं समय: मिट्टी की जुताई करने के बाद 12×10 फूट दूरी पर 60 सेमी x 60 सेमी x 60 सेमी के गड्ढे बनाएं और 15 दिन तक गर्म करें। बुआइ से पहले प्रति गड्ढे में 10-15 किलोग्राम छनी हुई खाद और 200 ग्राम डीएपी डालें। + 200 ग्राम पोटाश (10 ग्राम ट्राइकोडर्मा + 25 ग्राम सूक्ष्म पोषक तत्व + 10-15 ग्राम मिथाइल पैराथियान और गड्ढों को भर दें और फिर बुआइ करें और बुआइ के बाद पानी दें। अत्यधिक ठंड को छोड़कर किसी भी समय लगाया जा सकता है या अत्यधिक गर्मी।

खेती और छंटाई: अनार के पौधों में कई अंकुर होते हैं। इनमें से निचली 4 से 5 शाखाओं को मुख्य शाखा के रूप में रखना चाहिए और बाकी शाखाओं को काट देना चाहिए ताकि तने की वृद्धि अच्छी हो। हर वर्ष उचित छंटाई करें।

Vitrigold
Biotech Pvt. Ltd.

उर्वरक: अनार की फसल में पेड़ के अनुसार नीचे दी गई कोष्टक में बताए अनुसार उर्वरक दें, खाद की सारी मात्रा और रासायनिक उर्वरक की आधी मात्रा जून माह में और शेष आधी मात्रा सितंबर माह में देनी चाहिए- अक्टूबर। बाहरी तौर पर खाद डालने का समय बदलना पड़ता है. जैविक खाद, वर्मीकम्पोस्ट, कम्पोस्ट एवं अन्य जैविक खाद का प्रयोग करें।

प्रति अनार के पेड़ में उर्वरक की मात्रा

वर्ष (वर्ष)	छलनी (किग्रा)	नाइट्रोजन (ग्राम)	फास्फोरस (ग्राम)	पोटाश (ग्राम)
1	10	100	50	100
2	20	200	100	200
3	30	300	10	300
4	40	400	200	400
5 और उसके बाद	50	500	250	500

(उर्वरक की मात्रा मिट्टी परीक्षण के बाद निर्धारित करनी चाहिए)

अंतरफसलें: पहले दो वर्षों तक अनार के साथ अंतरफसलें ली जा सकती हैं।

जल प्रबंधन: पानी अनार के उत्पादन और गुणवत्ता को प्रभावित करता एक महत्वपूर्ण कारक है. पानी देने का अंतराल नियमित न रखने से बोरोन की कमी और नमी में बदलाव के कारण फल फटने लगते हैं। सर्दियों में 15 से 20 दिन के अंतराल पर और मानसून में बारिश के बाद पियत लगाएं।

फसल को नुकसान : अनार को रोग, कीट आदि से बहुत नुकसान होता है। इसलिए अनार की खेती के लिए फसल सुरक्षा बहुत जरूरी है.

रोग: अनार के मुख्य रोगों में शीर्ष सिकुड़न, फल धब्बा और फल सड़न शामिल हैं, जिन्हें उचित उपचार द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।